हिंदी भाषा : शिक्षा, साहित्य, कला और संचार माध्यमों में विविध मुद्दों पर

अभिव्यक्ति की लोकतान्त्रिक आवाज़

Heinz Werner Wessler (Uppsala University)

रामचन्द्र शुक्ल के मानक "हिंदी साहित्य के इतिहास" के अनुसार हिंदी साहित्य तक़रीबन १००० साल से जीवित होता रहा है। आदिकाल से उत्तरधुनिक्कल तक। "साहित्य" की परिभाषा अलग अलग ढंग से दी जा सकती है। इस के अंदर में गद्य और पद्य है, मौखिक और लिखित साहित्य, पत्रकारिता और निबंध साहित्य, और इन दिनों ब्लॉग और दूसरे किस्म के इंटरनेट की लिखाई, और विज्ञापन और sms भी साहित्यिक आलोचना का विषय बन सकता है। हिंदी में इन सारी विधाओं का पारस्परिक सम्बन्ध होता रहा। खासकर उच्च साहित्य, जनता का साहित्य और पत्रकारिता का गहरा सम्बन्ध स्पष्ट रूप से दीखता है।

अभी भी हिंदी में बहुत सरे लेखक पत्रकार होते हैं। हिंदी की प्रथम पत्रिका "उदन्त मार्तण्ड" जो पहली बार 30.5.1826 को प्रकाशित हुई आजकल के इ-पत्रिका तक १९० साल का सफर है। हिंदी की दैनिक पत्रिकाएं "दैनिक सुधा वर्षण " १८५४ से लेकर आज तक का अपना एक अद्भुत इतिहास है। दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान दैनिक, राजस्थान पत्रिका, नई दुनिया हिंदुस्तान के सबसे बारे दैनिक होते हैं और ज़्यादातर TV channels से संयुक्त हैं, जैसे कि Aaj Tak, ABP News, Durdarshan, NDTV India, Zee News etc. और यह सब ऑनलाइन भी है। इस के आलावा हिंदी-उर्दू बॉम्बे टाल्कीस फिल्म कंपनी से लेकर आज़ादी के पहले से भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण फिल्म की बोली है।

इन दिनों इंटरनेट पर बहुत ज़्यादा हिंदी के वेबसइट्स और हर किस्म के टूल्स आ चुके हैं। हिंदी की बहुत सारी सामग्रियां डाउनलोड करने, देवनागरी में लिखने और हिंदी सीखने के टूल्स उपलब्ध हैं। इस दृष्टि से देखकर हिंदी अभी भी "विश्वभाषा" के दर्जे में पहुँच चुकी है। इन सारी चीज़ों में काफ़ी पिछले सालों में काफ़ी उन्नति हुई, फिर भी अभी भी जब हिंदी की स्थिति का मामला हिंदी के प्रेमियों के बीच में उठता है तो "विध्वा विलाप" सी उठती है। खासकर यह दर होता है कि नई पीढ़ियां अंग्रेजी को पीछे पीछे करके अपनी मातृभाषा भूल जाते हैं या आगे बढ़ाने के लिए तैयार नहीं हैं। अलग अलग किस्म की कमज़ोरियाँ ज़रूर दिखती हैं, पिर भी बेउम्मीद की कोई वजह नहीं। इस सन्दर्भ में हिंदी शिक्षा के सन्दर्भ में कई सुझाव हैं।

हमको केंद्रबिंदु में लाना है कि हिंदी ज़ुबान में एक बहुसांस्कृतिक समाज के ऐतिहासिक अनुभव सम्मिलित जिससे वह ज़ुबान अपने आप में एक बेमिसाल खज़ाना है। जिन सांस्कृतिक स्रोतों ने सैंकड़ों से और हज़ारों साल से हिंदी को लगातार नई नई ज़िन्दगी दी हैं, वह अभी तक उपलब्ध हैं अभी भी सक्रीय हैं। और आखिर में हमको अपने को बार बार याद दिलानी है कि हिंदी में मस्ती है - और हिंदी सीखने में भी मस्ती होती है। यही मैं समझाता रहता हूँ अपने छात्रों को।